नाटक के माध्यम से लोकतंत्र की खोज

संयुक्ता साहा और देविका बेदी

एक वक्त ऐसा आया कि महान मुग़ल बादशाह अकबर इतना महान हो गया कि अपना ही अहितकारी बन बैठा और उसे लगने लगा कि दुनिया की हर चीज़ उसकी मिल्कियत है – घास का हर तिनका, हर पहाड़, ईंट, शहर, सब कुछ! एक दिन दोपहर के समय टहलते हुए ठोकर खाकर वह किसी बड़ी चीज़ पर गिर पड़ा। क्रोध में भरे हुए अकबर ने देखा कि वह अपने ही आँगन के बीच में लेटे हुए एक बूढ़े साधु से टकराया था। बेशक, वह बहुत गुस्से में था और उसने साधु को बाहर निकालने की कोशिश की। लेकिन साधु बिल्कुल भी नहीं घबराया जिससे शहंशाह की झुँझलाहट और बढ़ गई। बूढ़ा साधु उससे इस बारे में बात करने लगा कि दुनिया में कितने लोग रहे हैं, लेकिन कोई भी कभी भी अपने साथ अपने अगले जीवन में कुछ भी नहीं ले गया है – फिर चाहे वह सम्राट ही क्यों न हो। इस दुनिया में हर कोई सिर्फ़ एक मुसाफ़िर के रूप में रहता है और चला जाता है। बहुत सोच-विचार के बाद, जब अकबर को बात समझ में आने लगी तो साधु ने बड़ी चतुराई से अपनी साधु वाली वेशभूषा उतारी और अपनी असली पहचान प्रकट की – असल में वह साधु बहु-प्रशंसित दरबारी बीरबल थे। अब तो महान बादशाह अकबर को बड़ी शर्मिन्दगी महसूस हुई।

रंगकर्मी सफ़दर हाशमी ने बच्चों के लिए यह कहानी एक कविता के रूप में लिखी थी, जिसका शीर्षक था 'दुनिया सबकी'। इसे सफ़दर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट (सहमत) द्वारा इसी नाम से कविताओं के संग्रह में प्रकाशित किया गया था। यह पुस्तिका आगाज़ थिएटर ट्रस्ट की मार्गदर्शक और बुनियाद रही है, जो एक प्रक्रिया और प्रदर्शन के रूप में नाटक के माध्यम से बच्चों, किशोरों और वयस्कों के साथ जुड़ती है। हम नागरिकता को इस रूप में देखते हैं कि यह जो है उस पर सवाल करने की, जो हो सकता है उसकी पड़ताल करने की और अपनी कार्रवाई को नाटक के मंच से परे ले जाने की प्रक्रिया है।

दुनिया सबकी क्यों?

नागरिक वह होता है जो किसी देश में रहता है और उसके अधिकारों और विशेषाधिकारों का आनन्द लेता है, चाहे वह किसी भी वर्ग या सम्प्रदाय से सम्बन्धित हो। सभी नागरिकों की यह ज़िम्मेदारी है कि वे न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व के मूल्यों को बनाए रखने के लिए सक्रिय रूप से राज्य को जवाबदेह ठहराएँ। विविध पहचानों, दृष्टिकोणों और सरोकारों से भरे समाज में संवाद के बिना सकारात्मक कार्रवाई सम्भव नहीं है। और प्रभावी संवाद के लिए ऐसे स्थान की आवश्यकता है जो व्यक्तियों और समूहों में कल्पना, जिज्ञासा और समीक्षात्मक सोच को पोषित करते हों। आगाज़ में, हमारा व्यापक उद्देश्य यही है कि रंगमंच की भाषा के माध्यम से ऐसे अवसर बनाए जाएँ।

आगाज़ की एक अलग इकाई के रूप में कल्पना करने से भी पहले, 'दुनिया सबकी' वह पहला नाटक था जिसे हमने 2010 में तैयार किया था। नाटक के प्रदर्शन के वर्षों के दौरान, हर बार एक नया नाटक प्रस्तुत किया जाता था क्योंकि अभिनेताओं की कहानियाँ बदलती रहती थीं। हर बार वे अपनी व्यक्तिगत कहानियाँ लेकर आते, जो उस समय उनके जीवन के लिए प्रासंगिक हुआ करती थीं। इस प्रकार नाटक अपनी आवाज़ को समझने और उसे दूसरों के साथ साझा करने का एक तरीक़ा बन गया। एक सक्रिय नागरिक के रूप में संवाद शुरू करने की दिशा में यह साहसिक कार्य एक महत्त्वपूर्ण क़दम है। पिछले कुछ वर्षों में हम इस नाटक को कई युवाओं के साथ विभिन्न सन्दर्भों में मिलकर रच रहे हैं। सात से दस दिन तक चलने वाली इन कार्यशालाओं में 'दुनिया सबकी' की कई नई प्रस्तुतियाँ सामने आई हैं और कई अलग-अलग बच्चों की अनेक अलग-अलग कहानियों को अभिव्यक्ति मिली है।

इस लेख में, हम अपने दो अनुभव साझा कर रहे हैं: पहला, दिल्ली पब्लिक स्कूल, श्रीनगर (2017) में कक्षा VII से IX के चालीस बच्चों के साथ काम करने का और दूसरा, 2018 में दिल्ली में सामुदायिक पुस्तकालय परियोजना के शेख़ सराय/खिरकी ग्राम अध्याय (मुख्य रूप से प्रवासी आबादी वाली घनी आबादी वाली शहरी बस्ती) के 9 से 12 आयु वर्ग के 18 सदस्यों के साथ काम करने का।

प्रक्रिया शुरू करना

श्रीनगर के समूह ने अपने स्कूल में कलाओं पर अत्यधिक ज़ोर दिया। यहाँ पर हमने एक-दूसरे के नामों को जानने से भी पहले साथ में खेल खेलकर सत्र की शुरुआत की। इससे हम सभी के बीच का आपसी संकोच दूर हुआ और साझा सम्भावनाओं का मार्ग भी प्रशस्त हुआ। दूसरी ओर, शेख़

सराय में सामुदायिक पुस्तकालय परियोजना के सदस्य उन शैक्षणिक संस्थानों के साथ काम करते हैं जिनके पास कला सम्बन्धी बहुत कम सुविधाएँ हैं। यहाँ पर सबने मिलकर उस सँकरे तहख़ाने को साफ़ किया जहाँ पर हम खेलने वाले थे और इसकी वजह से सबके मन में आने वाली कार्यशाला के प्रति अपनेपन की भावना का विकास हुआ।

एक समूह के रूप में प्रस्तुत होने के लिए हमने एक गोला बनाकर प्रत्येक सत्र की शुरुआत की, जो एक क्रिया पद्धति के साथ-साथ समूह को साथ लाने का एक तरीक़ा भी बन गई। गोल घेरे में हर कोई बाक़ी लोगों को देख सकता है और बाक़ी भी उसे देख सकते हैं। इस प्रकार गोला एक ऐसा पात्र बन जाता है जिसमें हर किसी की उपस्थिति बस जाती है। गोल घेरा पारस्परिक रूप से थामी हुई संरचना का प्रतिबिम्ब है – इसमें कोई भी सामने, बीच में या अन्त में नहीं होता और सभी की इच्छा इसे आकार देती है।

सह-स्वामित्व की इस भावना की पुष्टि आगाज़ की नाटक मण्डली के सदस्यों ने भी की, जो अपनी किशोरावस्था से ही इन सत्रों का संयोजन करते रहे हैं। जब बच्चे/किशोर लगभग अपनी ही उम्र के लोगों के साथ किसी प्रक्रिया का संयोजन व समन्वय करते हैं तो इससे *शिक्षार्थियों* और *शिक्षकों* की धारणाएँ बदल जाती हैं। एक सामान्य आधार उभरता है, और इस प्रक्रिया में ग़लतियाँ करते हुए भी, विचारों को हँसी-खेल में स्वीकार करने और उनके आधार पर कुछ नया बनाने की सम्भावना बढ़ जाती है। जुड़ाव की गुणवत्ता और इस प्रकार खोजी गई कहानियों में भी बदलाव आता है।

कुछ नया खोजने के लिए प्रोत्साहन

एक प्रक्रिया के रूप में नाटक, सृजन की ओर बढ़ने के लिए विभिन्न उत्तेजनाओं का उपयोग करता है। श्रीनगर और शेख़ सराय, दोनों जगहों में हमने रचनात्मक प्रक्रिया पर बातचीत करने के लिए सवालों और लिखित सामग्री का इस्तेमाल किया। ये दोनों दूसरों के साथ हमारे अनुभवों के जुड़ाव पर मार्गदर्शित चिन्तन के लिए एक रूपरेखा तैयार कर सकते हैं। इससे पर्यावरण की समझ के प्रति जिज्ञासा/पूछताछ को बढ़ावा मिलता है और इससे परे जाकर सम्भावनाओं की कल्पना को आसान बना देता है। इस प्रकार की छानबीन से समूह को एक संवेदनाओं से भरा अनुभव होता है।

जो है, उस पर प्रतिक्रिया देने में सक्षम होने के लिए मौजूदा वास्तविकता को समझना और व्यक्तियों और समूहों के दैनिक जीवन पर पड़ने वाले इसके प्रभावों पर सवाल उठाना आवश्यक है। समझना और सवाल करना, अपने आप में, एक-दूसरे को मज़बूत करने के लिए बेहद ज़रूरी हैं। मुक्त सवाल भागीदारी को आसान बना देते हैं क्योंकि वे विविध दृष्टिकोणों और व्यक्तिगत अनुभवों के लिए अवसर पैदा करते हैं। निष्क्रिय रूप से कुछ ग्रहण करने की बजाय सक्रिय भागीदारी लोकतांत्रिक प्रथाओं की नींव रखती है। लोकतांत्रिक दायरे में बच्चों की भूमिकाएँ अलग नहीं हैं। उनके सवाल, विचार और कहानियाँ अक्सर अनसुनी रह जाती हैं – उनके दृष्टिकोणों को नकार दिया जाता है। उनके अनुभवों की गहराई को वयस्क लोग महत्त्व नहीं देते। इन कहानियों के प्रदर्शन से उनकी आवाज़ को विविध दर्शकों तक पहुँचाने के लिए एक मंच मिलता है।

हम कहानियों को उजागर करने की प्रक्रिया सवालों को तैयार करने के माध्यम से करते हैं। ये सवाल हमें अपनी ही कहानियों में अपना रास्ता खोजने में मदद करते हैं और ये ऐसे पुल हैं जो इन कहानियों को दूसरों की कहानियों से जोड़ते हैं – प्रतिध्वनियों, समानताओं, भिन्नताओं और असहमतियों के माध्यम से।

'दुनिया सबकी' पाठ्य एक प्रासंगिक सवाल उठाता है – *क्या दुनिया सभी की है?* प्रत्येक बच्चे का जवाब पूछताछ की एक और शृंखला की ओर ले जाता है – ''आप क्यों कहते हैं कि यह सबकी है/नहीं है? क्या आपको कभी ऐसा अनुभव हुआ है जिसकी वजह से आप ऐसा महसूस करते हैं?''

कविता एक *प्रेरणा* बन जाती है, जिससे व्यक्तिगत कहानियों को उभरने का मौक़ा मिलता है। बच्चों के अनुभव विविध होते हैं और पाठ, अपने केन्द्रीय सवालों के साथ, सभी की पूछताछ की सम्भावना को जन्म देता है। उन्हीं सवालों से प्रेरित होकर, जब ये कहानियाँ साझा की जाती हैं तो समुदाय की भावना पैदा करती हैं। *समुदाय* की यह भावना क्यों उभरती है? इसके विपरीत दुनिया के प्रति अपनेपन की भावना महसूस न करने वाले अनुभवों में समानताएँ पैदा करने में मददगार बड़े तंत्र कौन-से हैं?

यह कविता इस कथन पर आधारित है – ''या तो दुनिया सबकी है, या नहीं किसी की, भाई''। यह या तो सभी के अधिकारों पर ज़ोर देने की कोशिश है (या तो दुनिया सबकी है), या यह कतई लोकतांत्रिक प्रक्रिया नहीं है (या नहीं किसी की भाई)।

सामूहिक स्थान और आवाज़

एक सामूहिक ढाँचा तभी बना रहता है, जब उसके सभी सदस्य सह-अस्तित्व के तरीक़ों के तत्वों को सुधारने, नकारने और बनाने के लिए अपनी आवाज़ें जोड़ सकते हों। अगर किसी व्यवस्था में किसी एक समूह की आवाज़ों और अभिव्यक्तियों को दूसरों की तुलना में ज़्यादा चुप कराया जाता है, तो इसका मतलब है कि वह व्यवस्था समूह की इस धारणा से भटक रही है। लोकतांत्रिक आदर्श कोई मंज़िल नहीं है, बल्कि राज्य और उसके नागरिकों के बीच खींचा-तानी की एक सतत यात्रा

है। व्यवस्थागत मुद्दों और सामूहिकताओं के बीच यह खींचा-तानी प्रत्येक व्यक्ति के भीतर की जाँच-पड़ताल से उभरती है। यह पड़ताल वर्तमान वास्तविकता, भविष्य की सम्भावनाओं की कल्पना और इन भविष्यों की ओर यात्रा की परीक्षा है। इन अनेक सम्भावनाओं की अभिव्यक्ति संवाद करने, समानताएँ खोजने, आवाज़ उठाने और संघर्षों से गुज़रकर आगे बढ़ने की ओर ले जाती है। यह लोकतांत्रिक राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया भी है।

नाटक-आधारित पद्धतियाँ अपनी सीमाओं से आगे बढ़ने की लालसा पर टिकी होती हैं। कार्यशाला में साधारण-से-साधारण सांसारिक क्रियाओं को भी रचने में एक अनोखापन है। किसी काल्पनिक वॉश बेसिन के सामने, अपने हाथ में एक काल्पनिक ब्रश लिए हुए, एक नामौजूद नल से निकल रही पानी की काल्पनिक धार के साथ अपने दाँत माँजना इस सामूहिक स्थान में की जाने वाली सामान्य क्रिया नहीं है। किसी कार्य को पूरा करने की विधि की शब्दावली अपने साथ एक चुनौती लाती है। चुनौती केवल व्यक्तिगत सीमाओं को बढ़ाने की नहीं है, बल्कि सामूहिक रूप से ऐसा करने की इच्छा में भी है। अपने प्रयत्नों को बढ़ाने की चुनौती न केवल समूह के लिए है बल्कि सुगमकर्ता के लिए भी है। उन्हें इस पूरे प्रवाह में ख़ुद को मिली अधिकार की स्थिति को सही तरह पहचानने और एक ऐसा स्थान बनाने की ज़रूरत है जहाँ समूह व्यक्तिगत और सामूहिक, दोनों तरह से पनप सके। सुगमकर्ता को चाहिए कि वे कोमल आवाज़ों को अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित करें। यह सत्ता के पदों पर बैठे लोगों से इस अपेक्षा की सम्भावना को पुष्ट करता है कि वे सामूहिक विकास के ऐसे अवसर पैदा करें जहाँ सभी की आवाज़ सुनी जाती है। इस प्रकार, पाठ में अकबर की आवाज़ सुगमकर्ता के लिए एक हिदायत के रूप में सामने आती है।

मंच पर और मंच से परे

अकबर और बीरबल के बीच का संवाद दो बिल्कुल अलग भौगोलिक क्षेत्रों में कई व्यक्तियों, समूहों और समाजों के बीच एक बहुत बड़ा आदान-प्रदान बन जाता है, जिससे परिवर्तन की कई अलग-अलग सम्भावनाएँ पैदा होती हैं। श्रीनगर और शेख़ सराय, दोनों स्थानों में नाटकों की अन्तिम प्रस्तुति के लिए प्रतिभागियों के माता-पिता और साथी बड़ी संख्या में आए। दर्शकों और कलाकारों, दोनों के लिए यह मूल्यांकन का क्षण है। कलाकार अपनी अभी तक अनकही कहानियों को अभिव्यक्त करने में, और दर्शक अपने परिचितों को उनकी अनसुनी आवाज़ों को साझा करते हुए देखने में विश्वास की एक छलाँग लगाते हैं। दर्शक और कलाकार, दोनों मंच पर सामने आने वाली कहानियों पर विश्वास करने के एक अनकहे समझौते में प्रवेश करते हैं। वे दोनों अविश्वास के इस निलम्बित क्षण में नई वास्तविकताओं की सम्भावनाओं की खोज करते हैं। इस आदान-प्रदान में दोनों सूक्ष्म, कभी-कभी अगोचर, रूप से बदल जाते हैं। यह एक लोकतांत्रिक वार्ता है जो प्रगति पर है।

सामुदायिक पुस्तकालय परियोजना में एक माँ ने अपनी बेटी को पहली बार मंच पर देखा था। जब माँ ने अपनी बेटी को वे लैंगिक भूमिकाएँ निभाते हुए देखा जिसकी अपेक्षा उससे (बेटी से) की जाती है तो वे आत्मनिरीक्षण करते हुए वापस गईं। दिल्ली पब्लिक स्कूल में, कई विद्यार्थियों ने दादागिरी की कहानी के साथ भावनात्मक जुड़ाव की बात कही, जो बहिष्कार का एक और रूप है और सत्ता व ताक़त में असमानताओं का प्रदर्शन है। दोनों कार्यशालाओं में बच्चों ने अपनी कहानियों के साथ जुड़ने की यात्रा की और यह अनुभव किया कि वे उनसे कैसे प्रभावित हुए। इन कहानियों को साथ में कहने के लिए उन्होंने नाटक के प्रदर्शन की भाषा खोज ली थी। उन्होंने मंच पर अलग-अलग कहानियों को, अलग-अलग वास्तविकताओं को जीने की इच्छा व्यक्त की थी।

निष्कर्ष

नागरिक होने का कार्य मतदान के अधिकार से शुरू नहीं होता है। इसकी शुरुआत प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन और इन अनुभवों के साथ उनके जुड़ाव से होती है। अपनी पहचान की सचेत जाँच और उनकी बदौलत बनने वाली एकल कहानियाँ सक्रिय नागरिकता की शुरुआत है। बातचीत और शब्द अक्सर इस प्रक्रिया को शुरू करने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं। बच्चे, जो अपनी पहचान बना रहे होते हैं, नाटक के माध्यम से पहले ही इस खोज में शामिल हो चुके हैं। वे नाटक के प्रदर्शन के माध्यम से जटिल वास्तविकताओं का अर्थ समझ पाते हैं। बच्चे की दुनिया में, कहानियाँ गतिशील होती हैं, और उन्हें बदलते रहना सम्भव होता है। नाटक-आधारित पद्धतियाँ खेल और मार्गदर्शित खोज का उपयोग ऐसे उपकरणों के रूप में करती हैं जिनसे बच्चों को एकल कहानियों के मुखौटे के परे देखने में मदद मिल सके। कहानियाँ रचने की प्रक्रिया अनेक दृष्टिकोणों को प्रकट करती है। प्रदर्शन के माध्यम से विचारों को मंच पर सक्रिय किया जाता है, जिससे कलाकारों को रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में सुविचारित कार्रवाई की सम्भावनाओं की कल्पना करने में मदद मिलती है। यह क्रिया वांछित वास्तविकता को आकार देने की दिशा में पहला क़दम है।

संयुक्ता साहा एप्लाइड थिएटर की कलाकार और आगाज़ थिएटर ट्रस्ट की संस्थापक हैं। वे रंगमंच, सक्रियतावाद व मानसिक स्वास्थ्य और ख़ुशहाली के बीच के सम्बन्ध को समझने की जिज्ञासा रखती हैं। उनसे sanyukta@aagaaz-theatre.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

देविका बेदी दिल्ली में रहने वाली कला शिक्षिका और सुगमकर्ता हैं। वे सामुदायिक और शैक्षिक परिवेशों में बच्चों और युवाओं के साथ काम करती हैं। वर्तमान में वे यह समझने की कोशिश में है कि स्वयं के बारे में और बेहतर ढंग से जागरूक होने के लिए विविध क्षेत्रों में कला का उपयोग कैसे किया जा सकता है, जिससे कि और अधिक सुविचारित और जागरूक काम किए जा सकें। उनसे devika@aagaaztheatre.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल